Lecture Series - 26
28.04.2020

(1)

For
Economics
B.A.(H) Part-II, Paper-IV (A)
(Lecture Series No - 26)

Dr. Suman Kumar Poddar
Guest Teacher
Department of Economics
A.N.D. College, Samastipur.

Topic :→ Inter-Regional Trade and International Trade?
(अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार) → 1

* प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने अन्तर्राष्ट्रीय और आन्तरिक व्यापार को, व्यापारों की दो भिन्न-भिन्न जातियाँ मानी थीं। उनकी परिभाषा के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय या विदेश व्यापार वह व्यापार है, जो दो या दो से से अधिक राष्ट्रों के बीच होता है। इसके विपरीत, आन्तरिक व्यापार वह व्यापार है, जो एक ही देश में रहने वाले लोगों के बीच किया जाता है। इस परिभाषा से स्पष्ट है कि आन्तरिक व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अन्तर-राजनीतिक सीमाओं पर आधारित है कारण यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एक देश की राजनीतिक सीमा को पार कर जाता है, जबकि आन्तरिक व्यापार में ऐसा नहीं होता ऐसी भिन्नता के सन्दर्भ में ही प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का एक पृथक सिद्धांत (तुलनात्मक लागत सिद्धांत) प्रतिपादित किया किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए पृथक सिद्धांत प्रतिपादित करना उसी समय उचित ठहराया जा सकता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और आन्तरिक व्यापार में कुछ मौलिक अन्तर हो। अतः इस बात को देखने के लिए कि क्या अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए एक पृथक सिद्धांत की आवश्यकता है, हमारे लिए यह अधिक लाभप्रद होगा कि हम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मध्य समानताओं का अध्ययन कर लें।

अन्तर्क्षेत्रीय या आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में समानताएँ
(Similarities between Inter-Regional or, Internal and International Trade):-

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और आन्तरिक व्यापार के मध्य निम्नलिखित समानताएँ हैं:—

(1) वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय (Exchange of goods and services):- आन्तरिक व अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार के व्यापार में वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय सरल हो गया है।

Scanned with CamScanner

(2) ऐच्छिक सौदा (Optional Transaction):— व्यापार हमेशा ही ऐच्छिक होता है, चाहे वह आन्तरिक व्यापार हो अथवा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार। सरकार चाहे तो कुछ वस्तुओं के व्यापार का निषेध कर सकती है अथवा किसी विशेष प्रकार का प्रतिबन्ध लगा सकती है, परन्तु वह व्यापारियों को किसी प्रकार की वस्तु खरीदने के लिए विवश नहीं कर सकती। लोग विदेशी वस्तुएँ तभी खरीदते हैं, जबकि उनमें इसके लिए इच्छा होती है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भी आन्तरिक व्यापार की भाँति ऐच्छिक सौदों के द्वारा ही उत्पन्न होता है।

(3) दो पक्ष (Two Parties):— अन्तर्राष्ट्रीय एवं आन्तरिक दोनों ही व्यापारों में दो पक्ष होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में ये पक्ष - राष्ट्र होते हैं, जबकि आन्तरिक व्यापार में ये पक्ष - व्यक्ति होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी ये पक्ष व्यक्ति हो सकते हैं। परंतु ये अलग-अलग राष्ट्रों में रहते हैं। इसी प्रकार, जब सरकार स्वयं वस्तुओं का आयात अथवा निर्यात करती है, तो ऐसे समय में यह भी व्यापारी की तरह कार्य करते हैं।

(4) विशिष्टीकरण (Specialisation):— आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार विशिष्टीकरण है जो श्रम विभाजन का परिणाम है। एक देश में जब एक राज्य किसी वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त कर लेता है, तो देश के अन्य राज्य वस्तु का उत्पादन न करके उसी राज्य से उस वस्तु को खरीद लेते हैं।

इसी कारण विभिन्न देश जब किसी वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त कर लेते हैं, तो वहाँ से वह वस्तु अन्य देशों को जाने लगती है।

(5) लागत (Cost):- आंतरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों का उद्देश्य कम लागत पर वस्तुओं का उत्पादन करना है।

(6) दोनों पक्षों को लाभ (Benefit to both Parties):- अन्तर्राष्ट्रीय व आन्तरिक दोनों ही व्यापारों में दोनों पक्षों को लाभ होता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में दोनों ही राष्ट्र अथवा पक्ष अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का आयात करते हैं और दूसरे की आवश्यकता की वस्तुओं का निर्यात करते हैं।

(7) सामाजिक एवं राजनीतिक सम्बन्ध (Social and Political Relation):— एक ही देश में जब विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारी व्यापार करते हैं, तो उनमें सामाजिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध बनते हैं, ऐसा ही अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण भी जब दो देश एक-दूसरे के समीप आते हैं तो उनमें भी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध बनते हैं। कई उदाहरण तो ऐसे मिलते हैं, जिनमें भी सामाजिक, सांस्कृतिक संबंध तो व्यापार से होते ही हैं और स्वतः ही राजनीतिक संबंध भी स्थापित हो जाते हैं। अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं अन्तर्देशीय व्यापार में कोई मौलिक अन्तर नहीं है यह एक व्यापार की विधियाँ हैं।